अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय–द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

मानव ऐसा समाजशील प्राणी है, जो ज्ञान को संचित करना, ज्ञान का प्रसारण करना और ज्ञान में वृद्धि करना जानता है। इस एकत्र किए गए ज्ञान का लाभ उठा सकता है तथा दूसरों को भी लाभ उठाने देता है। इस तरह सीढ़ी की तरह ज्ञान में वृद्धि होती जाती है और पीढ़ी दर पीढ़ी यह ज्ञान बढ़ता जाता है यह ज्ञान पुस्तकालय में पुस्तकें समय–समय पर निकलने वाली पत्रिकायें, विश्वकोश, शोध ग्रन्थ, समाचार पत्र इत्यादि से प्राप्त होता है।

इसी तरह किसी भी विषय के विकास के लिए शोधकर्ती को पूर्व सिद्धांतों एवं उससे संबंधित शोधकार्यों से भलीभांति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यावहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध की प्रारंभिक अवस्था में इसके सैद्धांतिक एवं संशोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है। संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन इसलिए होता है की शोधकर्ती को योजना बनाने में प्रारंभिक शोध कार्यों की समीक्षा करनी होती हैं इस शोध का गुणात्मक तथा मात्रात्मक विश्लेषण शोधकर्ती को वास्तविक योजना बनाने और अध्ययन करने में यह अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक समझा जाता है कि वह दूसरों द्वारा

किये गये अपनी समस्या से 'संबंधित साहित्य की सूचनाओं से भली-भांति अवगत हो। जिससे की शोध की समस्या का चयन करने और पहचानने के लिए समानता प्राप्त करता है शोधकर्ती साहित्य समीक्षा के आधार पर अपनी परिकल्पनायें बनाती है वह अध्ययन के लिए आधार प्रदान करती है।

संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के कार्य

1. यह अनुसंधान कार्य के लिए आवश्यक सैद्धांतिक पृष्टभूमि प्रदान करता है। प्रत्येक प्रत्यय और धारणा को स्पष्ट करता है।
2. इसके द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि समस्या क्षेत्र में अनुसंधान की स्थिति क्या है, कहाँ, किसने और कैसे अनुसंधान कार्य किया है? इसके ज्ञान द्वारा अपने अध्ययन की योजना बनाना सुविधाजनक हो जाता है।
3. संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण अनुसंधान के लिए अपनायी जाने वाली विधि, प्रयोग के विश्लेषण के लिए प्रयोग आने वाली उपयुक्त विधियों से स्पष्ट करता है।
4. यह इस तथ्य का भी आभास देता है कि लिया गया अनुसंधान कार्य किस सीमा तक सफल हो सकेगा और प्राप्त निष्कर्षो की उपयोगिता क्या होगी।
5. इसका यह महत्वपूर्ण कार्य समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणा बनाना, समस्या के सीमांकन और परिकल्पना के निर्माण में सहायता करना है।

2.2 संबंधित शोधकार्यों का पुनरावलोकन

1. भट्टाचार्य जी.सी. (1996)

वाराणसी में प्राथमिक स्तर की छात्राओं एवं उनके माता–पिता की पर्यावरण अभिवृत्ति का अध्ययन किया, उनके संशोधन कार्य के निम्नानुसार उद्देश्य थे –

1. वाराणसी के प्राथमिक स्कूल में तीसरी एवं पाँचवीं कक्षा में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण अभिवृत्ति का अंतर उनके दृष्टिकोण एवं पर्यावरण संबंधी जिम्मेदारी के क्षेत्र में पता लगाना।
2. वाराणसी के कक्षा तीसरी एवं पाँचवी की छात्राओं एवं माता–पिता के पर्यावरण अभिवृत्ति का स्तर पता लगाना।
3. अध्ययन के लिए वाराणसी से तीसरी कक्षा के 290 विद्यार्थी एवं पाँचवीं कक्षा के 180 विद्यार्थियों व उनके 290 माता–पिता प्रदत्तों के रूप में चयनित किये गये। यह संबंध गुणांक एवं t मान द्वारा संग्रहित समंकों को विश्लेषित किया गया। अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये–
   1. पर्यावरण अभिवृत्ति के संदर्भ में कक्षा तीसरी एवं पाँचवीं के छात्रों में कोई भी भेद भाव नहीं पाया गया।
   2. दृष्टिकोण एवं पर्यावरणीय जिम्मेदारी के संदर्भ में कक्षा तीसरी एव पाँचवीं की कक्षाओं में कोई संबंधित अंतर नहीं पाया गया।

2. Bhattacharya (1997)

In his research paper "environmental awareness among higher secondary student of science and non science streams", the research have tried to determine the difference between the higher secondary student of Varanasi belonging to the science and non science streams in terms of their environmental awareness and to determine the difference between higher secondary student belonging to science and non science streams of Varanasi in terms of their environmental orientation attitude and environmental responsibility. Researcher has used a random cluster sampling technique from eastern U.P. region takes a sample of 118 male and 82 female students of both science and non science. A measure of environmental awareness developed by Singh and Rai was used to collect the data and the collected data were treated deviation and (t) test.

The major finding of the study were –

Student belonging to science discipline were comparatively better in terms of the environmental awareness as compared to non science students.

Science students were better on environmental orientation and environmental responsibility as compared to non science student.

Formation of attitude towards any issue on object may not depend upon the nature of discipline and the formal instructional situation as well as of curriculum structure.

3. मोदी विकास (2009)

"माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्राओं में पर्यावरणीय अभिवृत्ति का अध्ययन"।

इस अध्ययन के निम्न उद्धेश्य थे –

1. छात्रों व छात्राओं में पर्यावरण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

2. छात्रों व छात्राओं में पर्यावरण अभिवृत्ति की तुलना करना।

अध्ययन के निम्न निष्कर्ष निकाले –

1. छात्रों में पर्यावरण अभिवृत्ति औसत तथा छात्राओं में उच्च प्रकार की है।
2. छात्र, छात्राओं की पर्यावरण अभिवृत्ति के बीच सार्थक अंतर नहीं है।

4. Pande R. C. studied the dimensionality and the differences in the college environment of Garhwal University, Ph.D. Edu. Garwal Uni.

The specific objective were: (1) to construct college environment scale (one each of the five dimensions as defined by pace) and a sub-scale on campus morale (2) to make a comprehensive analysis of the intuitional scores, on the different scale, sub – scale and factor (3) to interpret the intuitional score on each dimension and on each factor and develop an environment profile for each college and (4) to provide valide and reliable coggege environment ten scale.

The sample of the study consisted of 2,200 student randomly selected from the ten affiliated and three constituent college of Garhwal university, having a minimum experience of one session on the campus. Tools were self-dedigned college environment scale, a sub scale on campus moral and ten additional test t-test were used for analyzing the data.

The important findings of the study were (1) campus morale was dominant in eight colleges while, among the climensions, projector ranked highest in the government as well as other types of colleges (2) The colleges significantly differed from one another on the basis of their environment.

5. प्रधान (2002) ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित हैं–

1. सामाजिक विज्ञान, भाषा तथा विज्ञान विषय शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. विज्ञान शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता, सामाजिक विज्ञान तथा भाषा शिक्षकों से अधिक है।
3. सामाजिक विज्ञान तथा भाषा शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
4. शहरी क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक तथा पर्यावरण शिक्षा से ज्यादा जागरूक हैं।

5. शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

6. प्रजापत (1996)

"कक्षा चौथी के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय अभिवृत्ति विकास के कार्यक्रम व परिणाम का अध्ययन" पी.एच.डी

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य

1 कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति कार्यक्रम का निर्माण करना।

2 कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में बुद्दिलब्धि के परिणाम का अध्ययन करना।

3 कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में लिंग के परिणामों का अध्ययन करना।

4 कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का निर्माण करना।

5 कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में बुद्धि लब्धि के परिणाम का अध्ययन करना।

संशोधनकर्ता ने न्यायदर्श का चयन गांधीनगर एवं गुजरात के प्राथमिक निजी स्कूल से किया एवं संग्रहित संमकों के विश्लेषण के लिए t मान एवं ANOVA सांख्यकीय प्रविधि का उपयोग किया।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष

1 कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरणीय अभिवृत्ति को बढ़ाने से पूर्व सम्पादित प्रारंभिक पर्यावरणीय अभिवृत्ति का मुख्य कार्य रहता है।

2 कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरणीय अभिवृत्ति को बढ़ाने वाले कार्यक्रम में सफलता मिलती है।

3 कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरणीय अभिवृत्ति में बुद्धिलब्धि एवं लिंग का सार्थक अंतर नहीं पाया गया। पुस्तक से शिक्षा ग्रहण करने के अलावा छात्र कार्यक्रम द्वारा शिक्षा ग्रहण करने में ज्यादा उत्साहित एवं प्रेरित दिखाई दिये।

7. Rai (2000) in his research tiled "Role of education and cultured practices in creating environmental awareness" tried to access the impact on education in crating environmental awareness among people and to analyze the role of education for awareness of environmental problems. For his study, researcher used a purposive sample of 160 students from secondary school. A self – made questionnaire was used for collection of data and the collected data were analyzed using t Test.

The major findings of the study were –

Student with high academic achievement in school have greater awareness to words environment. No significant difference regarding environmental concern among both boys and girls students were founds.

8. Rajput (2004)

The study of environmental awareness of high school student of urban and rural researcher observed that children in age group 7-12 studying in formal rural schools, formal urban school and non-formal rural schools displayed the same level of environmental awareness about certain aspects. In some areas, awareness of these three education groups was found two be rather inadequate. These were such aspects which required application part of knowledge and critical thinking which had not developed among these children who were still in the concrete operational stage.

9. टाक भारत (2009) "सरकारी तथा निजी विद्यालयों के अध्यापकों में पर्यावरण अभिवृत्ति"।

1. प्रस्तुत अध्ययन जोधपुर शहर के कुल 20 सरकारी तथा 10 निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का चयन कर प्रत्येक विद्यालय से 5 पुरूष एवं 5 महिला अध्यापिकायों को लेते हए कुल 200 अध्यापकों का अध्यन हेतु चयन किया गया।

उनके संसोधन कार्य से निम्नलिखित निष्कर्ष निकले –

1. सरकारी एवं निजी विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों (पुरूष एवं महिला) की पर्यावरण अभिवृत्ति का स्तर अच्छा है।
2. अध्यापकों द्वारा पर्यावरण शिक्षा संबंधी ज्ञान एवं कौशल प्रदान करने का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

3. पर्यावरण शिक्षा का व्यापक ज्ञान एवं कौशल प्रदान कर उनको पर्यावरण एवं संरक्षण में योगदान हेतु तैयार कर सकेंगे।

10. विटोरिया मुर्वोग (1987) "माध्यमिक स्कूल के ग्रामीण छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान, जागरूकता एवं द्रष्टिकोण का अध्ययन करना"।

अध्ययन के उद्देश्य

1. कक्षा 9,10 एवं 11 वीं के ग्रामीण माध्यमिक स्कूल के छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान, जागरूकता एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण का पता लगाना।
2. कक्षा 9,10 एवं 11 वीं के ग्रामीण माध्यमिक स्कूल के छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान, जागरूकता एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण के अंतर का पता लगाना।

निष्कर्ष

1. कक्षा 9,10 एव 11 वीं के ग्रमीण माध्यमिक स्कूल के छात्रो मे पर्यावरण ज्ञान,जगरूकता एवं पर्यावरणीय द्रष्टिकोण सकरात्मक हैं।
2. कक्षा 9,10 एवं 11वीं के ग्रमीण स्कूल के छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान,जागरूकता एवं पर्यावरणीय द्रष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

संग्रहित समंकों पर मध्यमान, सहसंबंध, मानक विचलन, t मान का उपयोग किया गया।